मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha1987@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

किसान एकजुटता 3
अभूतपूर्व आंदोलन 4
दुर्घटना नहीं, हत्या 5
संवैधानिक कोलाहल 8

वर्ष 31 अंक -45 फ़रीदाबाद 4-10 नवम्बर 2018 फोन : - 9999595632 ₹ 2.50

बीके अस्पताल ने पोस्टमार्टम रिपोर्ट में हत्या को बनाया दुर्घटना

पीजीआई रोहतक से ठीक रिपोर्ट आ जाने के बावजूद दोषी पर कार्यवाही नहीं

फ़रीदाबाद (म.मो.) 'स्मार्ट' ज़िले के सबसे बड़े सरकारी बीके अस्पताल में किसी का कोई इलाज हो न हो, रैबीज़ के टीके हों न हों परन्तु आये दिन होने वाले घोटालों की कोई कमी नहीं।

कुछ विलम्ब से मिली जानकारी के अनुसार यहां तैनात डॉक्टर विकास शर्मा ने 12 सितम्बर को 25 वर्षीय बलजीत का पोस्टमार्टम करके अपनी रिपोर्ट में मात्र 7 मामूली चोटें दिखाई जिनसे आदमी मर नहीं सकता। लेकिन असावटी निवासी बलजीत बाल्मीकि के परिजनों ने रिपोर्ट को ग़लत बताते हुये मेडिकल कॉलेज रोहतक में दोबारा पोस्टमार्टम के आदेश कराये।

मेडिकल कॉलेज रोहतक में प्रोफ़ेसर स्तर के 3 बड़े डॉक्टरों ने डॉक्टर जितेन्द्र जाखड़ के नेतृत्व में यह पोस्टमार्टम किया। रोहतक मेडिकल की रिपोर्ट में 27 गंभीर चोटों का विवरण है। इस रिपोर्ट के अनुसार छाती की हड्डियां (पसलियां),कॉलर बोन यानी हसली टूटी बताई गयी है। इसके अलावा पेट के अंदर अन्तड़ियां व नसें आदि फ़टने से खून का भारी रिसाव हुआ था। ये सभी चोटें एक आदमी की मौत का कारण हो सकती हैं। इन डॉक्टरों ने और गहरी जांच के लिये मृतक का दिल, दिमाग, विसरा आदि भी संरक्षित कर लिया जबकि बीके अस्पताल के डॉक्टर विकास शर्मा ने इन्हें संरक्षित करने की कोई जरूरत नहीं समझी थी।

संदर्भवश सुधी पाठक जान लें कि 12 सितम्बर को उक्त बलजीत अपने एक साथी के साथ रात के समय किसी फ़ैक्ट्री में काम करके बल्लबगढ की ओर से अपनी गांव असावटी की ओर

मोटरसाइकिल पर लौट रहे थे। उनके पास उनके औज़ार-पेचकस, प्लास, हेक्सा आदि भी थे। थाना सदर पलवल की गदपुरी पुलिस चौकी वालों ने इन्हें रोक लिया और पूछने लगे कि बताओ इन औजारों से कहां-कहां क्या-क्या वारदात करके आये हो? उन दोनों ने बहुत अनुनय-विनय करते हुए बताया कि वे चोर नहीं कारीगर हैं, इसकी तसदीक उनके कार्यस्थल व उनके गांव से की जा सकती है।

वर्दी का नशा और ऊपर से शराब का नशा हो तो फ़िर तसदीक करने की किसी को कहां फ़ुर्सत होती है; लिहाजा पुलिस वालों ने कर दी शुरू अपनी अमानवीय करतूत। बेहिसाब पिटाई के फ़लस्वरूप जब बलजीत बेसुध हो गया तो उसे अस्पताल ले जाया गया जहां उसकी मृत्यु हो गयी।

उधर पुलिस का कहना है कि ये 2 नहीं एक बाइक पर 3 सवार थे। चैकिंग के लिये रोकने पर पाया कि बाइक की नम्बर प्लेट पर मिट्टी आदि लगी थी जिससे नम्बर पढे नहीं जा सकते थे। पूछ-ताछ के लिये चौकी में बैठाये गये तो बलजीत निकल कर भाग लिया और किसी वाहन की चपेट में आकर घायल हो गया जो अस्पताल पहुंचने तक मर गया।

सच्चाई चाहे कुछ भी हो लेकिन डॉक्टर विकास शर्मा पर तो सवाल खड़ा होता ही है कि उसने अपनी रिपोर्ट में सच्चाई को क्यों छिपाया? जानकार बताते हैं कि डॉ.विकास पोस्टमार्टम करने के कुछ ज़्यादा ही शौकीन हैं। साल भर में 250-300 पोस्टमार्टम कर ही डालते हैं। वेतन के अलावा एक पोस्टमार्टम के लिये 1000 रुपये अलग से मिलते हैं और ग़लत रिपोर्ट के लिये पार्टी जो बम्पर बोनस देती है वह अलग से।

बेशक गाय हमारी माता नहीं, बैल है हमारा मुख्यमंत्री!

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

"सबसे न्यारा म्हारा हरियाणा", ये नारा आजकल हरियाणा सरकार के विज्ञापनों की फिजाओं में ऐसे तैर रहा है जैसे सच में ही यहाँ लोक मुहावरों के अनुसार दूध की नदियाँ बहने लगी हैं। मनोहर लाल खट्टर सरकार के इस बेशर्म ड्रामे में सबसे न्यारा किरदार खुद खट्टर का ही है, जो मुख्यमंत्री होते हुए भी अपने विधानसभा क्षेत्र के गड्ढे तक नहीं भर सकते।

पिछले 6 माह से करनाल का सबसे पॉश इलाका माल रोड जहाँ एसपी, डीएम, सुपेरिनटेंडिंग इंजिनियर और ऐसे ही अन्य सितारों से जगमग हस्तियों के मकान और कार्यालय हैं, खुदा पड़ा है। सीवर लाइन डालने के काम को लेकर खोदे गए माल रोड में लाइन के नाम पर अब सिर्फ गड्ढे की सीधी-टेढ़ी लाइन है। बड़े आलिशान घरों में घुसने के लिए निवासियों को गाड़ी चलाने में बेहद पारंगत होना अब अनिवार्य है अन्यथा गड्ढे में गाड़ी समेत गिरना होगा। पैदल चलने वाला तो कभी भी अपने हाथ-पैर तुड़वा सकता है।

इसी तरह, करनाल के बाद हरियाणा के दूसरे स्मार्ट शहर फरीदाबाद के सभी सेक्टर खुदे पड़े हैं। कहीं एयरटेल वालों ने खोद दिया है तो कहीं जिओ वालों ने। और अब तो ऐसा लगने लगा है कि जहाँ चाहे जो चाहे खोद ले। सुप्रीम कोर्ट ने मिट्टी से होने वाले प्रदूषण के लिए दिल्ली एनसीआर में निर्माण कार्य पर रोक लगाई है। पर फरीदाबाद में धड़ल्ले से निर्माण कार्य भी जारी है। करनाल माल रोड जैसे खुदे पड़े गड्ढों की धूल भी प्रदूषण का सबब है। पर खट्टर सरकार नारों से ही जनता का पेट भरने में लगी है । हो भी क्यों नहीं, मोदी के चेले जो ठहरे।

प्रदूषण की समस्या ने दिल्ली एनसीआर को बेहाल कर दिया है पर हमारे खट्टर जी को पता ही नहीं कि एनसीआर में ही उनके राज्य का भी कितना बड़ा हिस्सा, फरीदाबाद, गुरुग्राम, करनाल, पानीपत इत्यादि शामिल है। फरीदाबाद के तमाम सेक्टरों में इन खुदे पड़े गड्ढों की मिट्टी सड़क पर उड़ कर वातावरण में छा जाने के लिए छोड़ एयरटेल, जिओ और निगम सब अपने रूट की लाइनें व्यस्त किये बैठे हैं।

एक मुख्यमंत्री जो 6 महीने बाद भी अपनी विधानसभा के ही सबसे पॉश इलाके के गड्ढे न भर सके उसे सबसे न्यारा कहा जाना ही सही होगा। बीते माह खट्टर ने कहा कि हम वही वादे करते हैं जो पूरे कर सकें न कि कान्ग्रेसियों की तरह झूठे वादे। तो खट्टर जी ने सच ही कहा क्योंकि उनहोंने गड्ढा खोदने का वादा नहीं किया था और भरने का तो बिल्कुल भी नहीं। करनाल शहर का नजारा देख कर तो अब लगने लगा है कि यहाँ भी खुदा है वहाँ भी खुदा है, जहाँ नहीं है खुदा वहाँ कल खुद जाएगा।

यूँ तो हरियाणा में एक से बढ़कर एक निकम्मे मुखमन्त्रियों का दौर रहा है पर खट्टर का अपना ही रुतबा है इस मामले में। सब काम छोड़ जो मुख्यमंत्री गौवंश प्रतियोगिता करने में व्यस्त हो वो दिमाग से बैल ही है और ऐसे बैल को मुख्यमंत्री बनाने के लिए सबसे न्यारा म्हारा हरियाणा कहना सटीक है।

सरदार पटेल और भारत विभाजन

आशुतोष कुमार

जिन्ना ने सन 1940 में मुस्लिम लीग के लाहौर अधिवेशन में "टू नेशन थियरी" की जमकर वक़ालत की। उनका कहना था कि ..."हिंदू मुसलमान हर मानी में एक दूसरे से अलग हैं। इतिहास, स्मृति, संस्कृति, सामाजिक संगठन , जीवन उद्देश्य - सब कुछ दोनों के अलग हैं।

इसलिए वे केवल दो धर्म नहीं, दो राष्ट्र हैं, जो एक साथ रह ही नहीं सकते। अगर जबरन उन्हें साथ रखा गया तो यह दोनों के लिए विनाशकारी होगा। पता नहीं, कांग्रेस के नेता इस सचाई का सामना क्यों नहीं करना चाहते !"

इसके कुछ पहले, सन 1937 में , हिंदू महासभा के अहमदाबाद अधिवेशन में, उसके नए बने अध्यक्ष सावरकर यह कह चुके थे...."हम साहस के साथ वास्तविकता का सामना करें.भारत को आज एकात्म और एकरस राष्ट्र नहीं माना जा सकता, प्रत्युत यहाँ दो राष्ट्र हैं"

ये दोनों बातें जग-प्रसिद्ध हैं। लेकिन इसी सन्दर्भ में सरदार पटेल के एक अत्यंत महत्वपूर्ण वक्तव्य की कम चर्चा होती है। यह वक्तव्य अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की उस बैठक में दिया गया था, जिसमें विभाजन के प्रस्ताव को मंजूर किया गया। इस बैठक की अध्यक्षता सरदार पटेल ने की थी।

अपने भाषण के अंत में उन्होंने कहा - "यह बात हमें पसंद हो या नापसंद, लेकिन पंजाब और बंगाल में वास्तव में -डि फैक्टो- पाकिस्तान मौजूद है। इस सूरत में मैं एक क़ानूनी- दे जूरे - पाकिस्तान - अधिक पसंद करूंगा, जो लीग को अधिक जिम्मेदार बनाएगा। आज़ादी आ रही है, 75 से 80 प्रतिशत भारत हमारे पास है। इसे हम अपनी मेधा से मजबूत बनाएंगे। लीग देश के बचे हुए हिस्से का विकास कर सकती है।"

यह देखना कम हैरतअंगेज़ नहीं है कि सरदार केवल पाकिस्तान के प्रस्ताव को ही नहीं, एक तरह से, उसके पीछे की "टू नेशन थियरी" को भी मंजूर करते लग रहे हैं।

और भी हैरतअंगेज़ यह देखना है कि बंटवारे की बात इस तरह की जा रही है, जैसे मातृभूमि नहीं, कोई जागीर बंट रही हो। "हम अपने 80 प्रतिशत को सम्हालेंगे, बाकी का जो करना हो, लीग करे!"

एक महत्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के कुल 400 सदस्य थे, जिनमें उस दिन की ऐतिहासिक मीटिंग में केवल 218 मौजूद थे. इनमें से 29 सदस्यों ने विभाजन के प्रस्ताव का विरोध किया.

30 सदस्यों ने एब्सटेन किया, और 159 ने प्रस्ताव का समर्थन किया।

यानी कुल सदस्यों के केवल 40 प्रतिशत के समर्थन से देश बंट गया।

समर्थन के वोटों में महात्मा गांधी और पंडित नेहरू के वोट भी थे, जिन्हें मनाने का काम, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद कहते हैं, कि सरदार पटेल ने किया था। मौलाना खुद एब्सटेन करने वालों में थे, जबकि खान अब्दुल गफ्फार खान ने विरोध में वोट डाला था!

जो भी हो, कोई शक नहीं कि देसी रियासतों का "अस्सी फीसद" भारत में विलय कर सरदार ने देश की अमूल्य सेवा की है।

सरदार वल्लभ भाई पटेल की स्मृति को नमन। **(संबंधित खबरें पेज 6 पर)**